RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

गुरू नानक वाणी के नैतिक प्रवचन की विलक्षणता

डा. किरनदीप सिंह एवं डॉ. विनोद कुमार,

समाज विज्ञान एवं भाषा विभाग, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, पंजाब

(Corresponding Author: mrvinodsharma750[at]gmail.com)

गुरू नानक देव जी से प्रारम्भ हुई संकल्प काव्य परम्परा एक ऐसी दार्शनिक और रचनात्मक प्राप्ति है जिसने मध्यकाल के भारतीय समाज के अंदर नये मूल्यों और नये संकल्पों वाला प्रवचन निर्मित किया है। इस आध्यात्मिक काव्य-परम्परा के मूल सरोकार इतने व्यापक हैं कि जीवन का हर विवरण इसके झरोखे में से अर्थ प्राप्त करता है। यही कारण है कि गुरमत विचारधारा अपने समकाल से लेकर वर्तमान तक जीवन-प्रेरक स्रोत बनी हुई है। इस विचारधारा का मुहावरा तो आध्यात्मिक है परन्तु इसकी सभी इकाईयाँ लौकिक सरोकारों के साथ सम्बद्ध हैं। प्राय: सतही आधार पर यह सोच लिया जाता है कि आध्यात्मिक संसार समाज से परे ऊँचे मण्डलों की परिक्रमा तक सीमित रहता है और इस चिन्तन में मानवी सत्य अनुपस्थित हो जाते हैं। यह सोच वाणी-संसार के प्रसंग में प्रारम्भ से ही गलत सिद्ध होती है। संकल्प विचारधारा का केंद्रीय झरोखा यद्यपि ब्रह्म है परन्तु इस झरोखे में से जीवन का पूर्ण बिम्ब बनता है। वास्तव में स्थिति यह है कि बाणीकारों ने ब्रह्म को मानवीय जीवन के आर-पार ऐसे प्रसार दिया है कि इस दैवी-आलोक ने धरती को प्रकाशित कर दिया है। यही कारण है कि वाणी में से जो मानव उभरता है या जिस मानव की स्वीकृति मिलती है, वह मानव नैतिक मूल्यों वाला है। अर्थात वाणी-संसार में वह मानव मुक्त है, सच्चा है, गुरमुख अथवा सन्त है, जिसने नैतिक मूल्यों के झरोखे में से अपने आप को स्वीकृत करवाया है। यह तथ्य भली-भाँति जान लेना आवश्यक है कि संकल्प विचारधारा का एक बिन्दू यदि ब्रह्म के साथ जुड़ा है तो दूसरा बिन्दू ब्रह्म द्वारा बसाई धरती के साथ है। संकल्प विचारधारा की महत्ता का रहस्य ही यह है कि इसके आर-पार एक नैतिक मूल्यों वाला संसार बसा हुआ है। यही मूल्य धरती को धर्म का आवास बनाते हैं।

इससे पहले कि गुरू नानक द्वारा सृजित संकल्प-विचारधारा के मानवीय नैतिक प्रसंगों का वर्णन करें, नैतिकता के संकल्प अथवा मुल्यों के बारे जानना आवश्यक है। नैतिकता के लिए 'सदाचार' शब्द भी प्रचलित है, जो अपने आप में शुभ आचार का प्रतीक है। वास्तव में नैतिकता मानवीय चरित्र और मानवीय व्यवहार के साथ सम्बन्धित है। कहने का तात्पर्य है की नैतिकता मानवीय चरित्र का वह आन्तरिक गुण है जो उसकी बौद्धिक सामर्थ्य को सजीव करने में कारगर सिद्ध होता है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में दर्ज वाणी भी इस धारणा को प्रकट करती है:

सचहु औरै सभु को ऊपरि सचु आचारु॥ (श्री गुरु ग्रन्थ साहिब पृ. 62)

सत्य से भी बड़ी शक्ति मानवीय आचार है। इसीलिए गुरू नानक साहब ने उन लोगों को अनैतिक कहा है, जिनका चरित्र नीचे लिखे शलोकों की गवाही देता है:

गलीं असी चंगीआ आचारी बुरीआह॥
मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह॥ (85)

भारतीय दर्शन में नैतिकता को धर्म के झरोखों के साथ जोड़ कर व्याख्यायित किया गया है जब कि पश्चिम में धर्म-निरपेक्ष नैतिकता का विश्लेषण दार्शनिक स्तर पर किया गया है। यही कारण भारतीय धर्मों का मूलाधार ही नैतिकता है। अगर मानव अनैतिक है तो वह मुक्ति का हकदार नहीं बन सकता। स्वयं को सँवारे बिना प्रभु मिलाप नहीं और अपना आप संवारने की मूल युक्ति नैतिकता है। जीवन को सुधारने और संवारने वाला मूल्य ही नैतिकता है। ध्यातव्य है कि यह मूल्य चरित्र निर्माण वाले होने चाहिएं। नैतिकता के अंतर्गत मानवीय आचार की आंतरिक क्रियायों और बाह्य कार्य को विचारा जाता है। मानव और पशु के बीच भेद पैदा करने वाला आधार नैतिकता है। पशु-जगत में नैतिकता नहीं बल्कि केवल शक्ति है, जब कि मानव इस शक्ति को नैतिक मूल्यों के साथ नियंत्रण में रखता है। नैतिकता का संकल्पित विधिवत् अध्ययन पश्चिम में शुरू हुआ है- नीति शास्त्र की निर्मिती नैतिक मूल्यों के विश्लेषण में से हुई है। सुकरात पहला चिंतक था जिस ने नैतिकता की व्याख्या करते हुए कहा कि शुभ जीवन का ज्ञान मानवीय प्रकृति को जाने बिना संभव नहीं। "अपने आप को पहचानो" और " ज्ञान ही गुण है"- उसके मूल

RRIJM 2015, All Rights Reserved

नैतिक उपदेश थे। भाव सुकरात मानवीय ज्ञान को उसके श्रेष्ठ गुण के तौर पर पहचान देता है। दरअसल इसके पीछे एक यह कारण मुख्य रूप में सामने आता है कि मानवीय गुणों का अपने साकारात्मक पहलुओं के द्वारा विशेषता के सूचक होने के कारण यह ज्ञान प्राप्ति का भी असली स्रोत बनते हैं। यहाँ सुकरात के वाक्य इन दोनों पंक्तियों को एक दूसरे के संदर्भ में रख के देखा जा सकता है। 'ज्ञान ही गुण है' और अपने आप को पहचानो' की यह दो पंक्तियाँ एक दूसरे की परिभाषा निश्चित करती हैं। ज्ञान गुण के बराबर है और यह ज्ञान स्वयं की पहचान से आरंभ होता है। स्वयं की पहचान ज्ञान की प्राप्ति का पहला पड़ाव है और यही पड़ाव प्रथम गुण है जिसने अन्य गुणों के लिए आधार बनना होता है। यह सब गुण समिलित रूप में नैतिकता का प्रारूप बनाते हैं। प्लैटो ने नैतिकता की परिभाषा देते हुए कहा है कि मानवीय जीवन और सामाजिक परम्पराओं के बीच जो मूल गुण एकता पैदा करते हैं, वह गुण ही नैतिकता की परिधि में आते हैं।

अरस्तु ने नैतिकता को मानव की वह आन्तरिक शक्ति माना है, जिसके द्वारा वह अपने अंदरूनी जगत को एकाग्र करके लौकिक जगत को शुभ और प्रसन्नचित्त बनाता है। भारतीय पंरपरा में सत्य और दान जैसे सद्गुणों को नैतिक माना गया है। ऋगवेद में पाप और पुण्य को व्याख्यायित आधार ही नैतिकता को स्पष्ट करता है। उपनिसदों में कर्म की श्रेष्ठता को ही नैतिक माना है। बुद्ध धर्म का अष्ट मार्ग समुच्चय नैतिकता का विचार माडल प्रस्तुत करता है, जिसमें अहिंसा, दया, मित्रता और करुणा को नैतिक माना है। गीता के अनुसार निष्काम कर्म ही नैतिकता है। इस तरह नैतिकता को हम मानवी व्यवहार की शुद्धता, निर्पेक्षता और कर्मशीलता के साथ जोड़कर देख सकते हैं। क्योंकि समस्त वाणी मानवीय कल्याण और मानवीय चेतना का प्रवचन है, सो वाणी में नैतिकता को दिखाते उपरोक्त प्रसंग अपनी विचारधारा से सम्बद्ध विशेषताओं से सिक्त दिखाई देते हैं। आदि काल से ही लगभग हर धर्म का उद्देश्य मानव को विषय विकारों से मुक्त करके उसकी तन-मन की शुद्धता करना रहा है सो धर्म चिंतन में एक नैतिकता को इस शुद्धता के माध्यम के तौर पर भी देखा गया है। इसीलिए नैतिक मूल्यों को धर्म केंद्रीय सरोकार के तौर पर भी पारिभाषित किया जाता रहा है। यह वह जीवन जाँच सिखाते हैं जो परमार्थ की तरफ संकेत करती है। डा. राधा कृष्ण ने धर्म शास्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि विनम्रता, सहनशीलता, प्रेम और अहिंसा वह नैतिक सद्गुण हैं जो सच्चे विश्वास की परीक्षा बनते हैं। वास्तव में सभी धर्मों को जो मूल्य एक सूत्र में बाँधते हैं, वह मूल्य ही नैतिक मूल्य हैं। नैतिक मूल्यों को अमल में लाने वाले वाणी के बोल हर एक को समर्पित हो जाते हैं:

अवलि अलह नूरु उपाइआ, कुदरति के सब बंदे॥
एक नूर ते सभू जगु उपजिआ, कउन भले को मंदे॥(1349)

गुरू नानक वाणी के नैतिक मूल्य बड़े स्पष्ट हैं: सत, संतोष, दया, क्षमा, ज्ञान, नम्रता प्रेम, सेवा, शुभ कर्म, शुभ बोल आदि वाणी में इस्तेमाल करने के निर्देश मिलते हैं। यह वह कुछ विशेषण हैं जो अपने अनुप्रयुक्त रूप में नैतिकता के प्रसंग में विचारे जाते हैं। गुरू नानक देव जी ने अपनी वाणी में यह महावाक्य उच्चारण किया है कि मानव ने इस धरमसाल में रहते दो कार्य करने हैं। पहला कार्य बाहर की धरती को धरमसाल बनाकर रखना और दूसरा अपनी भीतरी धरती को धरमसाल बनाना है। यह धरमसाल तब ही बनेगी जब इस के अंदर सदगुण का प्रवेश हो जायेगा। इसी तरह वाणी में मुक्ति के बने सूझ माडल का आधार भी नैतिकता को माना गया है ज़िक्र करने योग्य है कि मुक्ति के संकल्प को लेकर नैतिकता के प्रसंग की पहुँच-विधि सिक्ख पंथ के बराबर चलते अन्य धर्मों की अपेक्षा विशेष है। सिक्ख पंथ में दूसरे धर्मों के मुकाबले मुक्ति के संकल्प की सहायता किसी किस्म के भेख/ पाखंड से परे मानव की तरफ से सद्गुणों की ग्रहणशीलत पर टिकी हुई। इन नैतिक मूल्यों को वाणी में ऐसे सूत्र माना है:

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंडी सतु वटु॥
एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु॥
ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ॥
धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ॥ (471)

उपरोक्त पंक्तियों में दया, संतोष, जत, सत आदि को केंद्र बिंदु रख कर यह कहा गया है कि यदि सगल जमात का जीवंत रूप देखना है तो इसके लिए नैतिक गुण अपनाने अनिवार्य हैं। मन को जीतने का मार्ग भी यही है। जिस मानव के अंदर सब्र, शुक्राना, संतोष, दया, सहनशीलता नहीं वह मानव अपने मन को कभी नहीं जीत सकता। सिर्फ़ मन को ही नहीं बल्कि वह तो अपनी मंजिल को भी प्राप्त नहीं कर सकता। मानव की अंतिम मंजिल प्रभु के दर को स्वीकृत होना है, उसकी बख़शीश प्राप्त करना है। जिस मानव के अंदर अहंकार, काम, क्रोध, लोभ, मोह के पंच दूत बस रहे हों, वह मानव प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकता। इन दुष्ट शक्तियों से मुक्त होने के संदेश को ही वाणी संसार की नैतिकता माना जा सकता है। वाणी में यह संदेश बड़ा स्पष्ट है:

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सरणि परे की राखहु सरमा॥ (378)
त्रिसना माइआ मोहणी सूत बंधप घर नारि॥
धनी जोबनि जगु ठगिया, लबि लोभि अहंकारि॥ (61)

इन पंक्तियों में नैतिक मूल्य बड़े स्पष्ट हैं। मन का मान त्यागना, काम क्रोध और दुर्जन की संगत से दूर रहना, सेवा, संयम रखते हुए तृष्णा से बचना, अहंकार और माया से दूर रहना ही नैतिकता है। मुसलमान को यह समझाया कि दया ही मस्जिद है, श्रद्धा ही नमाज़ है, हक की कमाई ही कुरान है, शर्म ही सुन्नत है और शील स्वभाव ही रोज़ा है। इन विचारों के द्वारा भी बाणीकारों ने यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि जिस व्यक्ति ने अपने चरित्र को सदाचारी बना लिया है उसको किसी अन्य कर्मकाण्ड की कोई ज़रूरत नहीं रहती। पवित्र जीवन ही गुरू का द्वार है। जो मानव इन सदाचारी गुणों को ग्रहण नहीं करते वह सिर्फ़ प्रभु मिलाप से ही वंचित नहीं रहते बल्कि वह हर पल भटकते हुए श्रापित जून भोगते हैं। अनैतिक कर्मों के साथ जुड़े व्यक्ति के बारे में वाणीकार द्वारा संकल्प विचारधारा में यह कहा गया है:

अन्दरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु॥
अठसठि तीर्थ जे नावहि उतरै नाही मैलु॥ (473)

संकल्प विचारधारा की प्राप्ति यह है कि इस के बाणीकारों ने केवल अध्यात्म या नैतिक मूल्यों की ही बात नहीं की बल्कि अपने समकालीन समाज में फैले व्यभिचार और पतनशील मनुष्य के विरुद्ध लोगों अंदर तीव्र चेतना पैदा की है। चेतना के इसी प्रवाह के अंदर नैतिक मूल्य अपनी विशेषता सहित प्रस्तुत होते हैं। यही चेतना लोगों को मानसिक तौर पर निम्न कर्मकाण्डों के विरुद्ध एकत्र करके एक नयी जीवन-जाँच की प्रेरणा देती है। वाणी चिंतन में वह जीवन अर्थहीन है जो नैतिकता/ सदाचार मूल्यों से टूटा हुआ है और ऐसे लोग धरती पर भार हैं। गुरू नानक देव जी ने बहुत तीखे स्वर में अनैतिक कार्य को रद्द करते जीवन के अन्दर शुचिता की तरफ संकेत किया है। यह शुचिता शुभ विचारों से उपजती है, सद्गुण अपनाने से ही मुक्ति होनी है। नीचे लिखी वाणी इस तथ्य की तरफ संकेत है कि जो पापी पाप कमाते हैं, वह समस्त समाज को अपवित्र कर देते हैं, उनका अनैतिक व्यवहार तन, मन और बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है:

माणस खाणे करहि निवाज॥ छुरी वगाइनि तिन गलि ताग॥
तिन घरि ब्रह्मण पूरहि नाद॥ उन्हा भि आवहि ओई साद॥
कूड़ी रासि कूड़ा वापारु॥ कूड़ु बोलि करहि आहारु॥
सरम धरम का डेरा दूरि॥ नानक कूड़ु रहिया भरपूरि॥ (471)

वाणी के अनुसार संसार में अनैतिक कामों में लिप्त मानव का प्रतीक मनमुख है, जो धर्म कर्म से टूटा हुआ माया में लीन है और भौतिक रुचियों में जी भर कर सहभागिता दिखाता है। मन की चंचलता इस मनमुख को हर पल व्याकुल करती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे अवगुण इसके अंदर पूर्ण रूप में प्रवेश कर चुके होते हैं, जो इसको बुद्धिहीन कर देते हैं। ज़िंदगी का शुभ कर्म भुला कर यह व्यक्ति भटकता है। यह मानव वाणी के अनुसार अंधा और मूर्ख है। मनमुख के समानंतर जो मानव सदाचार के साथ भरपूर है, उसे गुरमुख कहा गया है। गुरमुख वह है जो सदगुण का प्रतीक है, दूसरों का भला करता है, अज्ञान से ज्ञान तक ले कर जाता है, भले और बुरे के बीच भेदीकरण करने की सूझ देता है।

दरअसल गुरमुख वह आदर्शक मानव है जो सदाचार का जीवंत रूप है, सद्गुणों के साथ भरपूर यह मानव अपने कर्म के द्वारा प्रभु के दर पर स्वीकृत होता है। वाणी के अनुसार नैतिकता प्रभु मिलाप का मार्ग है और इस मार्ग पर गुरमुख आप भी चलता है पर दूसरों को साथ ले कर उनके लिए साधन भी बनता है:

गुरमुखि नामु दानु इसनानु॥ गुरमुखि लागै सहजि धीआनु॥
गुरमुखि पावै दरगह मानु॥ गुरमुखि भव भंजनु प्रधानु॥
गुरमुखि करणी कार कराए॥ नानक गुरमुखि मेलि मिलाए॥
गुरमुखि सासत्र सिम्रिति बेद॥ गुरमुखि पावै घटि घटि भेद॥
गुरमुखि वैर विरोध गवावै॥ गुरमुखि सगली गणत मिटावै॥
गुरमुखि राम नाम रंगि राता॥ नानक गुरमुखि खसमु पछाता॥ (942)

इस तरह वाणी में मानव को नैतिक गुणों से परिचित करवाने के लिए मनमुख/ गुरमुख के प्रतीक इस्तेमाल कर कर और इन प्रतीकों के द्वारा गुरू साहब ने मानवीय स्वभाव और गुण-औगुण को स्पष्ट करते उसको नैतिक मूल्यों प्रति सचेत किया।

अवगुण छोडि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछुताही जीउ॥

सर अपसर की सार न जाणहि फिरि फिरि कीच बुडाही जीउ॥
अंतरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ॥
निर्मल नामु जपहु सद गुरमुखि अंतर की गति ताहि जीउ॥ (598)

सदाचार के नुक्ते से एक अन्य विशेष पक्ष पर विचार करना समुचित है कि संकल्प विचारधारा का दौर झूठ की प्रधानता का दौर था। सांस्कृतिक विघटन की यह अवस्था मानवीय मूल्यों को पतन की तरफ ले कर जा रही थी। बाणीकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा न केवल नैतिकता के नये प्रसंग बनाए, बल्कि अनैतिकता की रूप रेखा तय करते निम्न कामों की निषिद्धता भी की:

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ॥
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दिसै नाही कह चड़िआ॥ (145)

वाणी चिंतन में मानव की आत्मिक ऊँचाई का रहस्य नैतिक-मूल्यों में है। परम आनंद की अवस्था वही प्राप्त कर सकता है जिसने अपने अंतःकरण का शुद्धीकरण किया है। यह शुद्धि तब ही संभव होती है जब मानव को ज्ञान प्राप्ति होती है। ज्ञान उस मानव को प्राप्त होता है जिसने अपने आप को अंदर से, बाहर से पवित्र कर लिया है। अंदरूनी पवित्रता का सम्बन्ध लौकिक जगत के साथ है और बाहर के की शुद्धि का रिश्ता मानवीय कर्ज़ है। वाणी संसार की नैतिकता से परिपूर्ण और मानव को दोनों रूपों में पवित्र करती है। इस पवित्रता को प्राप्त करने में नाम की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण होती है। प्रमाण के तौर पर जपजी का बड़ा स्पष्ट उच्चारण है कि बाहर की मैल तो स्नान के साथ उतरती है परन्तु 'मन की मैल' सिर्फ़ नाम के द्वारा धोई जा सकती है। इस दृष्टि से प्रभु का नाम भी नैतिकता में ख़ास भूमिका निभाता है। नाम के मनन-श्रवण के साथ मानव की चेतना एकाग्र हो जाती है, मन टिक जाता है, इच्छाओं की तृप्त हो जाती है, काल का डर समाप्त हो जाता है, सत्य और झूठ की पहचान हो जाती है। यह नाम की कमाई है जो मानव अंदर से पाप धो देती है:

संसारु रोगी नामु दारू मैलु लागै सच बिना॥
गुर वाकु निरमलु सदा चानणु नित साचु तीरथू मजना॥ (687)

कुल मिला कर यह कहा जा सकता है कि गुरू नानक द्वारा रची गुरमत विचारधारा के मूल सरोकार मानव को सदाचार के पक्ष से बलवान बनाते हैं। सारा उपदेश/ आदेश और ज्ञान ध्यान नैतिकता के प्रसंगों पर केंद्रित है। यही कारण है कि वाणी में से एक आदर्शक मानव का बिंब उभरता है जो हरेक के भले का प्रयोजन बनता है। वाणी का नैतिक पक्ष इतना मूल्यवान है कि इस झरोखे में से उस ज़िंदगी के दीदार होते हैं, जिसके आर-पार सत्य ही सत्य व्याप्त हुआ है। दरअसल वाणी में कार्यशील नैतिकता के प्रसंग से यह सहज ही ज्ञात होता है कि समुची वाणी का आधार यदि प्रभु प्राप्ति है तो प्रभु की प्राप्ति के मार्ग का सब से अहम पड़ाव नैतिकता ही है। सत्य से ऊपर शुद्ध आचार को समझना और जीवन के व्यवहार में इसको अपनाना ही गुरू नानक की विचारधारा का मूल आधार है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved